श्री शांतिनाथ विधान (लघु)
माण्डला

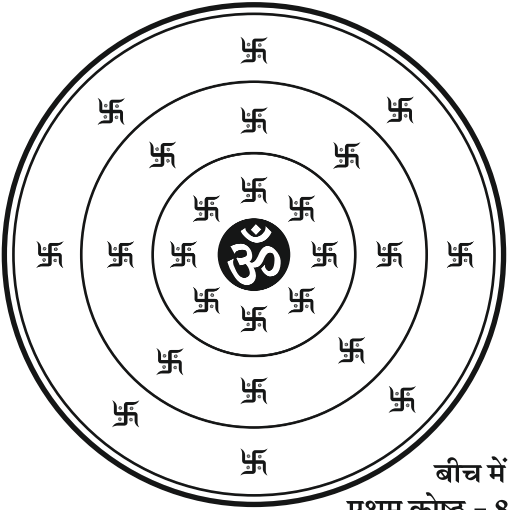

बीच में – ॐ
प्रथम कोष्ठ – 8 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य
कुल – 24 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

कृति	:	श्री शांतिनाथ भक्तामर विधान (हिन्दी-संस्कृत)
कृतिकार	:	प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	पंचम, 2026
प्रतियाँ	:	1000
संकलन	:	स्थविर मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी	:	मुनिश्री विभोरसागरजी, मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी, मुनिश्री विपिनसागरजी आर्यिका श्री 108 भक्तिभारती माताजी क्षुल्लिका श्री 105 वात्सल्यभारती माताजी
संपादन	:	ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425 ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017 2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, मो.: 9416888879 3. नीरज जैन, लखनऊ, मो.: 9451251308 4. जय अरिहंत टेडर्स, दिल्ली, मो.: 9818115971 5. राजेश जैन, खाकरोट वाले, इन्दौर, मो.: 9425316970

पुण्यार्जक :

पं. लक्ष्मीचन्द्र मुकेश कुमार जैन, इजादा परिवार, मो.: 9893767309

श्री सुखनंदन राजीव कुमार जैन परिवार

श्री बच्चूलाल जी अरुण कुमार जैन

श्रीमती मीना जैन, सुनील जैन, तामोट परिवार

ओबेदुल्लागंज (भोजपुर), जिला-भोपाल

कृति : श्री शांतिनाथ भक्तामर विधान (हिन्दी-संस्कृत)
कृतिकार : प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण : पंचम, 2026
प्रतियाँ : 1000
संकलन : स्थविर मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी : मुनिश्री विभोरसागरजी, मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी,
मुनिश्री विपिनसागरजी
आर्यिका श्री 108 भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री 105 वात्सल्यभारती माताजी
संपादन : ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425
ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873
प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, मो.: 9416888879
3. नीरज जैन, लखनऊ, मो.: 9451251308
4. जय अरिहंत टेडर्स, दिल्ली, मो.: 9818115971
5. राजेश जैन, खाकरोट वाले, इन्दौर, मो.: 9425316970

पुण्यार्जक :

श्री सूरजमल जी मोती, शंकर जी, नेमिचंदजी, रोहित काला
(सूर्यनगर तारों की कूट, जयपुर, मो.: 8114471019
स्व. श्रीमान पदमचंद जैन, श्रीमती प्रेमदेवी जैन, राकेश-रेखा पाटनी,
क्षमा, दिव्य जैन, भान विहार, माडल टाउन, जगतपुरा रोड़, जयपुर (राज.)

लघु विनय पाठ

दोहा

पूजा विधि से पूर्व यह ,पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव जी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनंत चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीड़ाहारी लोक में,भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के,शिव पद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भविजन को भव सिंधु में, एक आप आधार।
कर्म बंध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार।।8।।

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना ,से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिंब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं,अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्ञामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाऽशुद्ध अवस्था में कोई ,णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाये।।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए ।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि) (यदि अवकाश हो तो यहाँ पर सहस्रनाम पढ़कर दश अर्घ देना चाहिये नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढ़कर एक अर्घ चढ़ावें।)

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले ,पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंच कल्याणेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तर सहस्र नामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग,करणानुयोग,चरणानुयोग,द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तत्त्वार्थसूत्र दशाध्याय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

अनेकांत स्याद्वाद के धारी ,अनंत चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन , का करने वाले कल्याण।।
तीनलोक के ज्ञाता दृष्टा ,जग मंगल कारी भगवान।
भावशुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक ,श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!।
हे अर्हंत! अष्ट द्रव्यों का ,पाया मैंने आलंबन।
होकर के एकाग्र चित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

स्वस्ति मंगल पाठ

वृषभ अजित संभव अभिनन्दन,सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शान्ती जिन,कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके ,हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान्।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निष्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व-पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौ भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान्।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मनबल वचन कायबल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धी के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)(इति पुष्पांजलि क्षिपेत्)

लघु मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापना दोहा

देव शास्त्र गुरु देव नव, विद्यमान जिन सिद्ध।
कृत्रिमाकृत्रिम बिंब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध।।
सहस्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार।
सोलहकारण का हृदय, आह्वानन् शत् बार।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री..........सहित वर्तमान,भूत,भविष्यत,संबंधी पंच भरत, पंच ऐरावत, पंच विदेह विराजित सर्व तीर्थंकर,सर्व देव,शास्त्र,गुरु,नवदेवता,तीस चौबीसी,पंचमेरु, नंदीश्वर,त्रिलोक संबंधी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्रनाम, सोलहकारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार,तीर्थ क्षेत्र,अतिशय क्षेत्र, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नौ करोड गणधरादि मुनि, निर्वाण क्षेत्रादि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

सखी छंद

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ सहित सर्व पूज्येषु श्री जिनेन्द्राय नमः जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ, कामादिक दोष नशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चरु यह रसदार चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों मय दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे शिव फलदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
हमको भी निज सिम करो, कर दो यह उपकार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जयमाला

***दोहा*– जैनधर्म जयवंत है, तीनों लोक त्रिकाल।**
गाते जैनाराध्य की, भाव सहित जयमाल।।

ज्ञानोदय छंद

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम का है अर्चन।।1।।
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीन काल के जिन तीर्थेश।
पंच विदेहों के तीर्थंकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष।।2।।
स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी, देवों के जो रहे विमान।
भावन व्यंतर के गेहों में, रहे जिनालय महति महान्।।3।।
मध्यलोक में मेरु कुलाचल, गिरि विजयार्ध हैं इष्वाकार।
रजताचल मानुषोत्तर गिरि पे, नंदीश्वर हैं मंगलकार।।4।।
रुचक सुकुंडल गिरि पे जिनगृह, सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण।
सहस्रकूट शुभ समवशरण जिन, मानस्तंभ हैं पूज्य महान्।।5।।
उत्तम क्षमा मार्दव आदिक, बतलाए दश धर्म विशेष।
रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ, सहसनाम पावें तीर्थेश।।6।।

दोहा

सोलह कारण भावना, और अठाई पर्व।
पंच कल्याणक आदि हम, पूज रहे हैं सर्व।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री..........सहित वर्तमान,भूत,भविष्यत,संबंधी पंच भरत, पंच ऐरावत,पंच विदेह स्थित सर्व जिनेश्वर,सर्व देव,शास्त्र,गुरु,नवदेवता,तीस चौबीसी,पंचमेरु, नंदीश्वर,त्रिलोक संबंधी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सह्रसनाम, सोलहकारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार,तीर्थक्षेत्र,अतिशय क्षेत्र, ढाईद्वीप स्थित तीन कम नौ करो**ड़** गणधरादि मुनीश्वरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

जिनाराध्य को पूजकर, पाना शिव सोपान।
यही भावना है विशद, पाएँ पद निर्वाण।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शान्ति स्तवन

नाना विचित्रं भव दुःख राशि। नाना प्रकारं मोहंध च पाशि।।
पापानि दोषानि हरंति देव !, इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ !।।1।।
संसार मध्ये मिथ्यात्व चिंता। मिथ्यात्व मध्ये कर्माणि बंधं।।
ते बंध छेदंति देवाधिदेव !, इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ !।।2।।
कामस्य क्रोधं मायाऽतिलोहं। चतुः कषाया इव जीव बंधं।।
ते बंध छेदंति देवाधिदेव !, इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ !।।3।।
जातस्य मरणं ध्रूवस्य वचनं। द्यौ शांति जीव बहु जन्म दुःख।।
ते बंध छेदंति देवाधिदेव !, इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ !।।4।।
चारित्र हीने नर जन्म मध्ये। सम्यक्त्व रत्नं परिपालयन्ति।
ते बंध छेदंति देवाधिदेव !, इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ !।।5।।
मृदु वाक्य हीनं कठिनस्य चिंता। पर जीव निंदा मनसा च बंधं।।
ते बंध छेदंति देवाधिदेव !, इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ !।।6।।
पर द्रव्य चोरी पर दार सेवा। हिंसादि कांक्षा अनृत च बंधं।।
ते बंध छेदंति देवाधिदेव !, इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ !।।7।।
पुत्राणि मित्राणि कलत्राणि बंधुर्। बहु जन्म मध्ये इहजीव बंधं।।
ते बंध छेदंति देवाधिदेव !, इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ !।।8।।

(मालिनी छन्द)

जपति पठति नित्यं शांति नाथादि सिद्धं। स्तवन मृधु गिरायां पाप संतापहतुं।।
शिव सुख निधि पोतं सर्व सत्त्वानुकंपं। गुणमणि सुभद्रं भद्र कार्येषु नित्यं।।9।।

जप तप दाने पठते नित्यं, श्रीगुणभद्र स्वामि वाक्यं ते।
लभते नर स्वर्ग-सुखं, पुनरपि निर्वाण-पंथान्।।

।।इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

शांति विधान पूजा

स्थापना

दोहा– पूजा करते आपकी, शांतिनाथ भगवान।
हृदय पधारो आन के, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वेसरी छन्द)

प्रासुक निर्मल नीर चढ़ाते, जन्म जरादिक रोग नशाते।
शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केसर चन्दन यहाँ चढ़ाएँ, भवाताप से मुक्ती पाएँ।
शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत यहाँ चढ़ाने लाए, अक्षय पदवी पाने आए।
शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा में यह पुष्प चढ़ाएँ, काम रोग मेरा नाश जाए।
शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ ताजे नैवेद्य चढ़ाएँ, क्षुधा रोग से मुक्ती पाएँ।
शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय पावन दीप जलाए, मोह अंध मेरा नश जाए।
शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगंधित धूप चढ़ाएँ, आठों कर्म नाश हो जाएँ।
शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, मोक्ष महाफल हम भी पाएँ।
शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पद अनर्घ्य पावन हम पाएँ।
शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
वन्दन करते आपके, पद में बारम्बार।।

शान्तये शांतिधारा...

दोहा- पुष्पांजलि करते विशद, पुष्प लिए शुभ हाथ।
सुख शांती सौभाग्य हो, पूज रहे पद नाथ !।।

।। दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

अर्घ्यावली

दोहा– शांतिनाथ तव चरण में, वन्दन बारम्बार।
पुष्पांजलि करते विशद, पाने भव से पार।।

मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

'अशोक वृक्ष'

।। चाल छन्द ।।

जो शोक से रहित कहाए, वह तरु अशोक कहलाए।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।1।।

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुर पुष्प वृष्टी'

सुर पुष्प वृष्टि करवाते, मन में अति हर्ष मनाते।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।2।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टि सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दिव्य ध्वनि'

हो दिव्य ध्वनि शुभकारी, इस जग में मंगलकारी।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।3।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘चँवर’

सुर जिन पद चँवर ढुरायें, जो जिन महिमा दर्शायें।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।4।।

ॐ ह्रीं चँवर सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘सिंहासन’

हो रत्न जड़ित सिंहासन, जिस पर हो प्रभू का आसन।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।5।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘भामण्डल’

भामण्डल है शुभकारी, होता अति महिमाकारी।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।6।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘दुंदुभि’

दुंदुभि शुभ वाद्य बजायें, सुर नाचें हर्ष मनायें।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।7।।

ॐ ह्रीं दुंदुभि सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'छत्रत्रय'

त्रय छत्र शीश पर सोहें, जन-जन के मन को मोहें।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।8।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

वसु प्रातिहार्य प्रगटायें, जो अतिशय शांति दिलायें।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्धों के आठ गुण' 'अनंत ज्ञान'

।। मोतियादाम छन्द ।।

नशाए ज्ञानावरणी कर्म, प्रकट कीन्हें हैं आतम धर्म।
देशना जिनकी खिरी महान्, होय जग जीवों का कल्याण।।9।।

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञानगुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनंत दर्शन'

दर्शनावरणी किए विनाश, दर्श प्रभु पावन किए प्रकाश।
देशना जिनकी खिरी महान, होय जग जीवों का कल्याण।।10।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन गुणप्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘अनंत सुख’

मोहनीय कर्म का किए विनाश, किए प्रभु सुख अनन्त में वास।
देशना जिनकी खिरी महान्, होय जग जीवों का कल्याण।।11।।
ॐ ह्रीं अनन्त सुखगुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

‘अनंत शक्ति’

अन्तराय कर्म का किए हैं अंत, वीर्य प्रभु पाए आप अनन्त।
देशना जिनकी खिरी महान, होय जग जीवों का कल्याण।।12।।
ॐ ह्रीं अनन्त वीर्यत्वगुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

‘अव्याबाधत्व’

वेदनीय का नाशे उन्माद, सुगुण प्रगटाए अव्याबाध।
देशना जिनकी खिरी महान्, होय जग जीवों का कल्याण।।13।।
ॐ ह्रीं अव्याबाधत्व गुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

‘अवगाहनत्व’

सुगुण अवगाहन कीन्हें प्राप्त, कर्म आयू के नाशी आप्त।
देशना जिनकी खिरी महान्, होय जग जीवों का कल्याण।।14।।
ॐ ह्रीं अवगाहनत्वगुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

‘अगुरुलघुत्व’

अगुरुलघु गुण प्रगटाए देव !, कर्म प्रभु नाशे गोत्र स्वमेव।
देशना जिनकी खिरी महान्, होय जग जीवों का कल्याण।।15।।
ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वगुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'सूक्ष्मत्व'

सुगुण सूक्ष्मत्व जगाए आप, कर्म प्रभु अपना नाशे नाम।
देशना जिनकी खिरी महान्, होय जग जीवों का कल्याण।।16।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व गुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

अष्ट गुण प्रगटाए जिनराज, पूजते जिनवर के पद आज।
देशना जिनकी खिरी महान्, होय जग जीवों का कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टगुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्ट ऋद्धियाँ

'बुद्धि ऋद्धि' है बुद्धि प्रदायी, पूज रहे हम जो शिवदायी।
शांतिनाथ पद शीश झुकाते, भाव सहित जिन महिमा गाते।।1।।

ॐ ह्रीं बुद्धि ऋद्धि धारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'ऋद्धि विक्रिया' महिमाशाली, जग का मंगल करने वाली।
शांतिनाथ पद शीश झुकाते, भाव सहित जिन महिमा गाते।।2।।

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धि धारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'सुतप ऋद्धि' तप वृद्धीकारी, जो है अतिशय कर्म निवारी।
शांतिनाथ पद शीश झुकाते, भाव सहित जिन महिमा गाते।।3।।

ॐ ह्रीं सुतप ऋद्धि धारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'चारण ऋद्धी' है अतिशायी, गगन गमन की शक्ति प्रदायी।
शांतिनाथ पद शीश झुकाते, भाव सहित जिन महिमा गाते।।4।।
ॐ ह्रीं चारण ऋद्धि धारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
'बल ऋद्धी' है पौरुषकारी, विशद योग तीनों जयकारी।
शांतिनाथ पद शीश झुकाते, भाव सहित जिन महिमा गाते।।5।।
ॐ ह्रीं बल ऋद्धि धारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
'औषध ऋद्धी' जग उपकारी, जग जीवों के कष्ट निवारी।
शांतिनाथ पद शीश झुकाते, भाव सहित जिन महिमा गाते।।6।।
ॐ ह्रीं औषधि ऋद्धि धारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
'रस ऋद्धी' रस वृद्धीकारी, नीरस करे सरस आहारी।
शांतिनाथ पद शीश झुकाते, भाव सहित जिन महिमा गाते।।7।।
ॐ ह्रीं रस ऋद्धि धारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
'ऋद्धि अक्षीण' की महिमा न्यारी, द्रव्य क्षेत्र की जो विस्तारी।
शांतिनाथ पद शीश झुकाते, भाव सहित जिन महिमा गाते।।8।।
ॐ ह्रीं अक्षीण ऋद्धि धारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
बुद्धि विक्रिया चारण ऋद्धी, तप बल रस औषधि अक्षीण।
अर्घ्य चढ़ाते हम ऋद्धियाँ, पद भक्ती में होकर के लीन।।9।।
ॐ ह्रीं अष्ट ऋद्धि धारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
जाप्य : ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम सर्व
कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा – शांति नाथ भगवान का, जपें निरन्तर नाम।
मंगलमय जयमाल गा, करते चरण प्रणाम।।

(चौपाई)

शान्ति नाथ शांती के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
जो हैं जन–जन के उपकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।1।।
सर्वार्थ–सिद्धि से चयकर आये, हस्तिनागपुर धन्य बनाए।
हुई रत्न वृष्टी शुभकारी, तीन लोक में विस्मयकारी।।2।।
इन्द्रराज ऐरावत लाया, प्रभु के पद में शीश झुकाया।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, सबने भारी हर्ष मनाया।।3।।
प्रभु ने संयम को अपनाया, तपकर केवलज्ञान जगाया।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, जग को मोक्ष मार्ग दिखलाए।।4।।
बुध ग्रह की बाधा जब आवे, नाना विध के कष्ट दिलावे।
हँसी खुशी में गम आ जाए, भय आकस्मिक उसे सतावे।।5।।
कारोबार मंद पड़ जावे, बार–बार घाटा लग जावे।
श्रम सारा निष्फल हो जावे, दुख पे दुख अति बढ़ता जावे।।6।।
रात दिवस ये चिन्ता लागे, प्रभु भक्ती में मन न लागे।
बन्धू बान्धवाभी मुख मोड़ें, सुत दारा भी रिश्ता छोड़ें।।7।।

भूख प्यास निद्रा नहिं आवे, कैसे दुख की घड़ियाँ जावें।
पाप कर्म की लीला न्यारी, कभी रोग कभी हाहाकारी।।8।।
मस्तक पीड़ा सर्दी खाँसी, होता मति भ्रम सर्व विनाशी।
भक्ति प्रभु की शांति दिलाती, रोग शोक संकट मिटवाती।।9।।
यह विधान जो भक्त रचावें, ग्रह अनुकूल सभी हो जावें।
सुख सम्पत्त गुण यश के दानी, नव निधि चौदह रत्न प्रदानी।।10।।
दीन दरिद्री धन पा जाये, पुत्र हीन सुखकर सुत पाये।
अल्प बुद्धि ज्ञानी बन जाये, रोगी रोग नशे सुख पाये।।11।।
सर्व क्लेश अघ संकट हर्त्ता, शांतिनाथ सब सुख के भर्त्ता।
नाथ ! निरंजन तारण हारे, हम सब के प्रभु आप सहारे।।12।।
मोक्ष महल जब तक ना पाएँ, तब तक तुमको हृदय बसाएँ।
'विशद' भावना रही हमारी, पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी !।।13।।

दोहा – नाथ ! आपकी भक्ति से, भक्त बने भगवान।
अतः भाव से नित करें, भक्ती सहित गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – श्रद्धा के शुभ पुष्प यह, अर्पित हैं भगवान।
मुक्ती हो संसार से, पाना पद निर्वाण।।

।। दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्री शांतिनाथ चालीसा

दोहा – परमेष्ठी जिन धर्म जिन, आगम मंगलकार।
जिन चैत्यालय चैत्य को, वन्दन बारम्बार।।
जिन मंदिर में शोभते, जिनवर शांतीनाथ।
चालीसा गाते 'विशद', करते हम गुणगान।।

चौपाई

जम्बू द्वीप में क्षेत्र बताया, भरत क्षेत्र अनुपम कहलाया।।1।।
भारत देश रहा शुभकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी।।2।।
नगर हस्तिनापुर के स्वामी, विश्वसेन राजा थे नामी।।3।।
रानी ऐरादेवी पाए, जिनके सुत शांती जिन गाए।।4।।
माँ के गर्भ में प्रभु जब आए, रत्नवृष्टि तब देव कराए।।5।।
भादव कृष्ण सप्तमी जानो, शुभ नक्षत्र भरणी पहिचानो।।6।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश शुभकारी, मेष राशि जानो मनहारी।।7।।
जन्म प्रभु जी ने जब पाया, देवराज ऐरावत लाया।।8।।
शचि ने प्रभु को गोद उठाया, फिर ऐरावत पर बैठाया।।9।।
पाण्डुक वन अभिषेक कराया, सहस्त्र नेत्र से दर्शन पाया।।10।।
पग में हिरण चिन्ह शुभ गाया, शांतिनाथ तब नाम बताया।।11।।
पंचम चक्रवर्ती कहलाए, कामदेव बारहवें गाए।।12।।
तीर्थंकर सोहलवें जानो, यथा नाम गुणकारी मानो।।13।।
नव निधियों के स्वामी गाये, चौदह रत्न श्रेष्ठ बताए।।14।।
सहस्त्र छियानवे रानी पाए, छह खण्डों पर राज्य चलाए।।15।।

नीतिवन्त हो राज्य चलाया, दुखियों का सब दुःख मिटाया।।16।।
सूर्य वंश के स्वामी गाए, सारे जग में यश फैलाए।।17।।
जाति स्मरण प्रभु को आया, महाव्रतों को प्रभु ने पाया।।18।।
स्वर्गों से लौकान्तिक आये, अनुमोदन कर हर्ष मनाए।।19।।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, हुए दिगम्बर मुनि अविकारी।।20।।
एक लाख राजा संग आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।।21।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदस तिथि जानो, तपकल्याणक प्रभु का मानो।।22।।
आत्म ध्यान कीन्हें तब स्वामी, किये निर्जरा अन्तर्यामी।।23।।
पौष सुदी दशमी शुभ आई, केवलज्ञान की ज्योति जगाई।।24।।
समवशरण आ देव बनाए, प्रभु की जय-जयकार लगाए।।25।।
दिव्य देशना आप सुनाए, धर्म ध्वजा जग में फहराए।।26।।
छत्तिस गणधर प्रभु जी पाए, प्रथम गणी चक्रायुध गाए।।27।।
यक्ष गरुण जानो तुम भाई, यक्षी श्रेष्ठ मानसी गाई।।28।।
योग निरोध किये जगनामी, गुण अनन्त पाये जिन स्वामी।।29।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदस तिथि जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो।।30।।
नौ सौ मुनी श्रेष्ठ बतलाए, साथ में प्रभु के मुक्ती पाए।।31।।
महामोक्ष फल तुमने पाया, शिवपुर अपना धाम बनाया।।32।।
कूट कुन्द प्रभ जानो भाई, कायोत्सर्गासन शुभ गाई।।33।।
जग में कई जिनबिम्ब निराले, अतिशय श्रेष्ठ दिखाने वाले।।34।।
श्री जिनवर को जो भी ध्याये, वह अपने सौभाग्य जगाये।।35।।
शान्तिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।36।।

भाव सहित जो दर्शन पाते, वे अपने सौभाग्य जगाते।।37।।
सुत के इच्छुक सुत उपजाते, निर्धन जीव सम्पदा पाते।।38।।
रोगी अपने रोग नशाते, अज्ञानी सद्ज्ञान जगाते।।39।।
'विशद' भाव से महिमा गाएँ, हम भी मोक्ष महापद पाएँ।।40।।

दोहा – चालीसा चालीस दिन, पढ़ें सुनें जो लोग।
सुख शांती सौभाग्य का, मिले उन्हें संयोग।।
शांतिनाथ के चरण को, ध्यायें जो गुणवान।
अल्प समय में ही 'विशद', पावें वे निर्वाण।।

अस्थिर जीवन

तन पिजड़े से प्राण पखेरु, जब बाहर जावें।
स्वजन और परिजन कोई फिर, तुम्हें ना अपनावें।।1।।
रोते-रोते तेरी चिता में, मिलकर आग लगावें।
कंचन काया जलकर तेरी, राख राख हो जावे।।2।।
आशा पल-पल बढ़ती लेकिन, आयू घटती जाए।
काया जर्जर होवें निश दिन, माया बढ़ती जाए।।3।।
आज मिला जो सुन्दर अवसर, कल आए ना आए।
'विशद' जिन्दगी में कल क्या हो, कोई जान न पाए।।4।।
अतः आत्महित कर ले प्राणी, सद्गुरु यह समझावें।
आज सरीखा पावन अवसर फिर आवे न आवें।।5।।

श्री शान्तिनाथ भगवान की आरती

तर्ज– भक्ति बेकरार है.........

शान्तिनाथ दरबार है, महिमा अपरम्पार है।
जिन मंदिर में शान्तिनाथ की, हो रही जय-जयकार है।।टेक।।
चयकर के सर्वार्थ सिद्धि से, हस्तिनागपुर जन्म लिए-2
विश्वसेन माँ ऐरादेवी, को आकर प्रभु धन्य किए-2।।
शान्ति...।।1।।
चालिस धनुष रही ऊँचाई, स्वर्ण रंग शुभ पाएँ जी-2
एक लाख वर्षों की आयु, चिन्ह हिरण प्रगटाएँ जी-2।।
शान्ति...।।2।।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, हुए तीन पद धारी जी-2
जग वैभव सब छोड़ प्रभु जी, हुए आप अनगारी जी-2।।
शान्ति...।।3।।
भादों वदी सप्तमी पावन, गर्भ कल्याण मनाए जी-2
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश को सुर-नर, जन्मोत्सव में आए जी-2।।
शान्ति...।।4।।
ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को, पावन संयम पाए जी।
पौष शुक्ल दशमी को प्रभु जी, केवलज्ञान जगाए जी।।
शान्ति..।।5।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश को जिनवर, मोक्षमहाफल पाए जी।
कर्म नाशकर 'विशद' पूर्णतः, शिवपुर धाम बनाए जी।।
शांन्ति...।।6।।

श्री शांतिनाथ पूजन (संस्कृत)

माण्डला

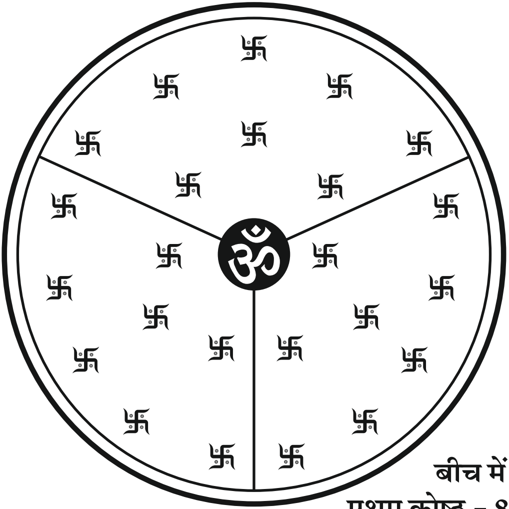

बीच में – ॐ
प्रथम कोष्ठ – 8 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य
कुल – 24 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

श्री शांतिनाथ स्तवन

(अनुष्टुप छन्द)

समस्त घाति नाशकम्, ज्ञान विशद भाषकम्।
दिव्य ज्ञान दायकम्, नमामि शांति जिनवरम्-2।। 1।।
सुतत्त्व ज्ञान दायकम्, मोक्ष पथ प्रदायकम्।
राग-द्वेष नाशकम्, नमामि शांति जिनवरम्-2।। 2।।
त्रिकाल पुण्य घोषणम्, भवाब्धि सिन्धु वारणम्।
कषाय सर्व मोचनम्, नमामि शांति जिनवरम्-2।। 3।।
मति सुमति प्रदायकम्, मोक्ष पंथ सुनायकम्।
पुण्य पाप रोधकम्, नमामि शांति जिनवरम्-2।। 4।।
एकान्त वात खाण्डनम्, अनेकान्त मण्डनम्।
स्याद्वाद दायकं, नमामि शांति जिनवरम्-2।। 5।।
नरेन्द्र पाद पूजनम्, खगेन्द्र पाद मर्दनम्।
सुरेन्द्र पाद अर्चनम्, नमामि शांति जिनवरम्-2।। 6।।
सुदर्श ज्ञान चारणं, दोष विशद वारणम्।
क्षमादि धर्म धारकं, नमामि शांति जिनवरम्-2।। 7।।
सुमंशापूर्ण देशकम्, चित् स्वरूप रंजकम्।
'विशद' लोक पूजनम्, नमामि शांति जिनवरम्-2।।8।।

बसन्ततिलका छन्द

शांतिं करोतु परमं अरहंत देव। शांति करोतु सततं जिनराज सिद्ध।।
शांतिं करोतु अतिशय निर्ग्रन्थ साधुः। शांतिं करोतु 'विशद' कृत शांति भक्तिं।।

।। इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री शांतिनाथ पूजन (संस्कृत)

स्थापना

जय जयति जय विश्वसेन, सुत ऐरादेवी नंदनं।
प्रभु कर्मघाति विनाश कर्त्ता, ज्ञान सूर्य निरंजनं।
जय कामदेव सुचक्रवर्ती, धन्य प्रभु तीर्थंकरं।
सर्वज्ञ केवलज्ञान धर, हे वीतराग! महीधरं।।
शुभ वीतरागी शांति जिन के, बिम्ब अतिशयसुंदरं।
आह्वान स्थापन विशद, सन्निधिकरण अभिनंदनं।।

ॐ ह्रीं परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अनुष्टुप छन्द)

गंगादि तीर्थ नीराद्यैः, शीतलैः इति गंधकैः।
पूजयेत् शांति जिनपं, विश्व शांती हेतवे।। 1।।

ॐ ह्रीं परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलं निर्व.स्वाहा।

चन्द्र काश्मीर सन्मिश्रै, चन्दनै रति शीतलै।
पूजयेत् शांति जिनपं, विश्व शांती हेतवे।।2।।

ॐ ह्रीं परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः चंदनं नि.स्वाहा।

अखण्ड-रक्षतै शुभ्रै-रक्षयानन्त सौख्यया।
पूजयेत् शांति जिनपं, विश्व शांती हेतवे।।3।।

ॐ ह्रीं परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अक्षतं नि.स्वाहा।

कुन्द कैतक मन्दारै-मालती वकुलादिभिः।
पूजयेत् शांति जिनपं, विश्व शांती हेतवे।।4।।

ॐ ह्रीं परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः पुष्पं नि.स्वाहा।

कनत्कांचन पात्रस्थै, नैवेद्यै रस संयुतै।
पूजयेत् शांति जिनपं, विश्व शांती हेतवे।।5।।

ॐ ह्रीं परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं नि.स्वाहा।

दीपै रुद्योतिताशेष, वस्तुयातै मनोहरै।
पूजयेत् शांति जिनपं, विश्व शांती हेतवे।।6।।

ॐ ह्रीं परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं नि.स्वाहा।

चंदनागुरु कर्पूरै संयुतै वर धूपकैः।
पूजयेत् शांति जिनपं, विश्व शांती हेतवे।।7।।

ॐ ह्रीं परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः धूपं नि.स्वाहा।

नारंग चोच मोचाश्चै, श्री फलै फल दायकै।
पूजयेत् शांति जिनपं, विश्व शांती हेतवे।।8।।

ॐ ह्रीं परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः फलं नि.स्वाहा।

जल चंदन पुष्पाद्यै, दृव्यैरष्टविधैर्वरे।
पूजयेत् शांति जिनपं, विश्व शांती हेतवे।।9।।

ॐ ह्रीं परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

इत्थं समभ्यर्चित शांतिनाथ, सम्यक्त्व मुख्याष्ट गुणस्तदीया।
सर्वार्चिता: सर्व जनार्चनीया:, स्वात्मोपलब्ध्यै मम् संस्तुतेमी।।

शान्तेये शांतिधारा दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

पंचकल्याणक के अर्घ्य

बसन्त तिलका छन्द

या सप्तमी तिथि-रभूदशिते नभस्ये।
गर्भागमो जगति मंगल कृच्चतश्यां।।
ऐरावती सुतवती भुवनैक माता।
देवैर्नुता जगति मंगल मातनोतु।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण सप्तम्या गर्भकल्याणक प्राप्त परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठेऽसिते तिथि-रभूत सुचतुर्दशी सा।
तस्यां जतिश्च नगरे हस्तिनापुर जिन।।
कामार्थदाय्य भय दायि च भक्ति भाजां।
पीयूष बिन्दुरऽपि तृप्ति करो न किं वा।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौषेऽसिते तिथि-रभूत सुचतुर्दशी सा।
तस्यां तिथौ सुजिन लिंग धरोऽपि भगवान।।
ध्यानेक लीन तनु निश्चल श्री जिनस्य।
तस्य प्रभो-रहमऽपि स्तवनं विधास्ये।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपकल्याणक प्राप्त परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौषे सिते सकल बोध-रपि दशम्यां।
धर्मामृतैर्भवि जना-नभिषिक्तवान् यः।।
श्री विश्वसेन नृपजो भुवि शांतिकारी।
शान्त्यैषिणां वितनुते किल पूर्ण शांतिं।।4।।

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठेऽसिते तिथि-रभूत् चतुर्दशी सा।
योगं निरोध क्रियते क्षय कर्म बंधा।।
दीक्षा तिथौ शिव रमां परिपूर्ण सौख्यां।
सम्मेद शैल शिखरे स्वय-माप्नुतेऽसौ।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त परम शांतिप्रदायक श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(अनुष्टुप छन्द)

विश्वसेन ऐरा देवी, तनुजं च शान्ति जिनः।
परम शांति दायकं, कुर्यात् में गुणावलीम्।।

(बसन्त तिलका छन्द)

ज्ञानच्चराचर जगज्जिन! गोपितैर् हि।
विज्ञापितैः किमधुना त्वमवैषि सर्वं।।

क्षिप्रं विधत्स्व करुणां मयि हे कृपाब्धे!
रक्ष प्रसीद नय शांति-मनंतिमा मां।।1।।
सर्वस्य पार्श्व इह नाथ! चिरं भ्रमित्वा।
श्रांतोऽस्मि केऽपि नहि दुःख निवारणेऽर्हाः।।
श्रुत्वा सकृज्जिनखे! प्रथितं यशस्ते।
पादाम्बुजं दृढ़मना अहमाश्रितोऽस्मि।।2।।
पद-पद भया भव-भवे जिन! दुखमाप्तं।
त्रैलोक्यवित्! त्वमपि वेत्सि तदेव सर्वं।।
सर्वेश! संप्रति भवान् भवतां यदेव।
कर्त्तव्यमस्ति कुरुतां मम तत्प्रमाणं।।3।।
न्याय्यं व्यतिक्रमितुमीश! जनोऽप्रबुद्धः।
शक्नोति किंतु भगवन्! त्वमिहाखिलनः।।
शांतिनाथ! इति विश्रुत एव तस्मात्।
न्यायं कुरुष्व मम् कर्मकदर्थि तस्य।।4।।

अनुष्टुप छन्द

जगज्जानें शांतिं कुर्युः, एवं सर्व गणाय च।
शांतं मनो में सर्वं, शांतिनाथ जिनं नमः।।

ॐ ह्रीं परम शांति प्रदायक श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ जिनं नत्त्वा, परम शांति हेतवे।
विश्व शांतिप्रदं अर्हन्, 'विशद' शांति कुरू मम्।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

प्रथम वलयः – विशद गुणावली

अथ जन्मातिशय

सुगंधं सुरूपं निःस्वेद देही, बलानन्त संस्थान सहननं च प्रथमं।
सहस्राष्ट लक्षण वचन च प्रियहितं, दशातिशय जन्म समये च प्राप्तं।। 1।।

ॐ ह्रीं जन्मातिशय प्राप्त परम शांतिप्रदायक श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

अथ ज्ञानातिशय

चतुराननं खेगमनं ना छायां, योजन सुभिक्षं शत नोपशर्गं।
नख केश वृद्धिं रहितं व्यथा च, विद्येश्वरत्वं न कवलाहारं।। 2।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानातिशय प्राप्त परम शांतिप्रदायक श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

अथ देवातिशय

सर्वार्ध भाषा च मागधीया, मैत्री जनः सर्व ऋतु पुष्प च प्राप्ते।
आदर्श तल भू वायु मनोगतं, जनानंद कर भू गत धूल शूलं।।
कमले गमन वृष्टि गंध नीरै, निर्मल दिशानभ च निर्मलानि।
परस्पराह्वान् फल भार शालि विशद धर्म चतुर्दशातिशयाः।। 3।।

ॐ ह्रीं देवकृतातिशय प्राप्त परम शांतिप्रदायक श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

अथ अनंत चतुष्टयं

क्षयं घातिया कर्म च देवदेवं, गुणानन्त प्राप्तं चतुष्टय-स्वयै।
विशद ज्ञान दर्शं सुखं वीर्यत्वं, गुणाकार रूपं चऽर्हज्जिनेशः।।4।।

ॐ ह्रीं अनंतचतुष्टय प्राप्त परम शांतिप्रदायक श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ अष्ट प्रातिहार्य

क्षत्रत्रयं मण्डल तेजरूपं, दिव्य ध्वनि वृक्षो अशोक रूपाः।
चँवर उक्त यक्षेश सिंहासने च, नभै दुन्दुभिनादी च पुष्पवृष्टिः।।5।।

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्य प्राप्त परम शांतिप्रदायक श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ तप

ऊनोदरेणानशनं च शयनं, विविक्तं रसत्याग कायोपक्लेशः।
वृत परिसंख्या व्युत्सर्ग ध्यानं, प्रायश्चित विनय सेवाध्याय वैयावृत्ति।।6।।

ॐ ह्रीं द्वादश तप प्राप्त परम शांतिप्रदायक श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ दशलक्षण

उत्तम क्षमा मार्दव माचरन्ति, शौचार्जवं संयम ब्रह्मचर्यं।
त्यागस्तपोऽकिन्चन भाव रूपं, समये तथोक्तं दश धर्मभेदात्।।7।।

ॐ ह्रीं दशलक्षण प्राप्त परम शांतिप्रदायक श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ अष्टादश दोष रहितम्

क्षुधा भय पिपासा जरा राग द्वेषो, जनम मृत्यु विस्मय रति स्वेद खेदो।
चिंता विषादोमदो मोहनिद्रा, रुजा दोष रहितं च अर्हज्जिनेन्द्रा!।।8।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहितम् परम शांतिप्रदायक श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ चतुस्त्रिंशदातिशयाः

चतुस्त्रिंशदातिशयाः चतुष्ट्यानन्त तपस्तथा।
प्रातिहार्य धर्माः युक्ते, दोष हीना शांतिज्जिनाः।।9।।

ॐ ह्रीं चतुस्त्रिंशदातिशयाः प्राप्त परम शांतिप्रदायक श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

आप्तेन विशदो धर्मः, परोपकृत ये सताम्।
गंभीर ध्वनिनाऽभाषि, वर्णमुक्तेन निस्पृहम्।।

मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

प्रातिहार्य युक्त बीजाक्षर

हकारं बिन्दु संयुक्तं, षड् वर्गाभ्यंतर लिखेत्।
मंत्रादि बीज संयुक्तं, शांतिनाथ जिनं मुदा।।1।।

ॐ ह्रीं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ॡ ए ऐ ओ औ अं अःहम्ल्व्र्यूं इति बीज वर्णीय परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

भकारं बिन्दु संयुक्तं, सम्भवं षट्सु पूरितम्।
मंत्रादि बीज संयुक्तं, शांतिनाथ जिनं मुदा।।2।।

ॐ ह्रीं क ख ग घ ङ संयुक्ताय हम्ल्व्र्यूं इति बीज वर्णीय परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मकारं विलेखन् नाम्नास्, स्तंभं षड् वर्ग संस्थतम्।
मंत्रादि बीज संयुक्तं, शांतिनाथ जिनं मुदा।।3।।

ॐ ह्रीं च छ ज झ ञ संयुक्ताय मम्ल्व्र्यूं इति बीज वर्णीय परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रकारोन्नत षड्वर्ग सर्वपूरि शुभद्र वैः।
मंत्रादि बीज संयुक्तं, शांतिनाथ जिनं मुदा।।4।।

ॐ ह्रीं ट ठ ड ढ ण संयुक्ताय रम्ल्व्र्यूं इति बीज वर्णीय परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षकारं संघ षड् वर्ग, वश्याकर्षण मोहनम्।
मंत्रादि बीज संयुक्तं, शांतिनाथ जिनं मुदा।।5।।

ॐ ह्रीं त थ द ध न संयुक्ताय घ्म्ल्व्र्यूं इति बीज वर्णीय परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झकारं षट् स्वरं चैव, लिखेत् प्रेतस्य खर्परे।
मंत्रादि बीज संयुक्तं, शांतिनाथ जिनं मुदा।।6।।

ॐ ह्रीं प फ ब भ म संयुक्ताय झ्म्ल्व्र्यूं इति बीज वर्णीय परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकारं मार्ग निर्वेद, भीत भव्य विभीतदं।
मंत्रादि बीज संयुक्तं, शांतिनाथ जिनं मुदा।।7।।

ॐ ह्रीं य र ल व संयुक्ताय सूम्ल्व्र्यूं इति बीज वर्णीय परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लिखेन्नाम खकारस्य, भेदैः पृथ्वी समन्वितं।
मंत्रादि बीज संयुक्तं, शांतिनाथ जिनं मुदा।।8।।

ॐ ह्रीं श ष स ह संयुक्ताय ख्म्ल्व्र्यूं इति बीज वर्णीय परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकेकाक्षर पिण्डानां, भेदं चौक्त्वा पृथक्-पृथक्।
पूर्व सेवा प्रकर्तव्या, पुष्पै साष्ट सहस्रकैः।।

ॐ ह्रीं बीज वर्गीय लक्ष्मी प्रभावोदित तुष्टि पुष्टि श्री बलायुरारोग्यैश्वर्य क्षेमकल्याण विभववितरणो-पेतवर प्रसाद्सद्धर्मवृध्यर्यं सिद्ध्यर्थं शान्त्यर्थं .... नाम धेयस्य सर्वेभ्यः शांति कुरु कुरु अष्टपिण्डाक्षर संयुक्ताय ख्म्ल्व्र्यूं इति बीज वर्णीय परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः – अष्ट सिद्ध गुणावली

बसंत तिलका छन्द

यस्यदुराग्रहविमुक्तचिदात्मिकाया,
माहात्म्यतः सकलवस्तु-सुधर्मराशिः।
ज्ञानं च वर्णयति चारु यथार्थतत्त्वं,
सम्यक्त्वशक्तिमशरीर यजे गतत्वाम्।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व गुण समन्विताय श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सामान्य - संगत - विशेष - समस्तवस्तु,-
चक्रंप्रतिक्षण नवीभवनत्वमाप्तम्।
निर्लेपमेव विशिनष्टि समुद्धितोया,
तज्ज्ञान-शक्ति-समलंकृत-सिद्धमर्चे।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान गुण समन्विताय श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्तावलोकनमभावित - भेद - भाव,
माहुर्जिदाद्दशमयास्त विनिश्चयत्वम्।
वस्तु व्यनक्ति सकलं सहवित्समं या,
तद्दुष्टि-शक्तियुत-सिद्धपतिं महामः।।3।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन गुण समन्विताय श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यस्य प्रभाववशतः सकलार्थ-सार्थ,
जानाति पश्यतिसमंसुवित् ईक्षणाश्च।
नोत्पद्यते किल मनागपि खेदभावस्
तद्वीर्य-शक्तियुतसिद्धपतिं महामः।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य गुण समन्विताय श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यस्य प्रतापवशतः करणावबोधाः,
संप्रष्टुमेव न विभुंविभवो भवन्ति।
सत्केवलावगमनार्थ - ममेय - रूपं,
तत्सूक्ष्म-शक्तियुतसिद्धपतिं यजामः ।।5।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व गुण समन्विताय श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यस्य प्रसत्तिवशतः स्वनिवासदेशे,
स्थानं प्रदातुममितात्मगुणस्य शक्ताः।
नैवं मिथो व्यतिकरोद्भव-खेदता स्यात्,
यायज्मि सत्तदवगाहन-शक्तिसिद्धम्।।6।।

ॐ ह्रीं अवगाहन गुण समन्विताय श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नीचैः पतन्ति रसवद्गुरवो भवन्तो,
यद्यर्कतूलवदपि भ्रमणं लघिष्ठाः।
यस्य प्रसादवशतो नियता स्थिति स्यात्-
सिद्धंयजे तदमलागुरुलध्वनन्तम्।। 7।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघु गुण समन्विताय श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसारसागर विवर्तन - जातखेद,-
विश्रान्तये यदुरुवृत्ति-मिहाचचार।

अन्तव्यतीतमिति तत्फलभूतशर्म,
निर्बाधमाप्तममलं प्रयजामि सिद्धम्।।8।।

ॐ ह्रीं अव्याबाध गुण समन्विताय श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयघाति विनिर्मुक्तो, जयाऽनन्त शिवश्रियम्।
जय सद् दर्शन ज्ञान, जिनास्ते गुण संयुते।।

ॐ ह्रीं अष्ट गुण समन्विताय श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

(अनुष्टुप छन्द)

घातिकर्म विनाशित्वाद्, प्राप्तानन्त चतुष्टयं।
दोषाष्टादश रहितं, शांतिनाथ पदं नुतं।।

(तोटक छन्द)

मदण चक्क बट्टी तित्थयरं, शांतिनाथ जिण महिमा कहिदं।
ठविदा भरहेणं जिण पडिमा, आहारे ठाणे बहु गरिमा।।1।।
जम्मे दह अइशय जिण पावं, दह पावइ केवल्य जगावं।
चौद्दस देवोक्कद जिण पावइ, सोलस दुगुण इंद सिर नावइ।।2।।
जिण सव्वथसिद्धि चय आवा, हत्थिणाग पुरि धण्णं कहावा।
विश्वसेण भूपदि वण भणियां, ऐरा मादु पाद जिण गहिदं।।3।।

निर्मल धर्मं शर्मापन्नं, परम धर्म धर जनतासन्नं।
शांतिं शांतिकरं मन भावं, भक्तामर जिन चरण नतायं।।4।।
चिर सुर सेवित मुनि गणनाथं, प्रणमामि यति पद शत् माथं।
कमल दलायत कोमल नेत्रं, जिनपं केवल सस्य सुक्षेत्रम्।।5।।
निर्जित कर्मानन्त जिनेशं, वन्दे मुक्ति (श्री) सिरी परमेशं।
नौमि नौमि गुण रत्नकरण्डं, संसाराम्बुधि तरल तरण्डं।।6।।
गर्भ जन्म तप केवल ज्ञानं, प्राप्त आप्त शुभ पंच कल्याणं।
दोष अठारह रहित जिनेश, ऽनन्त चतुष्टय धर परमेशं।।7।।
'विशद' त्रिभुवनपति शत वद्यं, मेरू सुगिरि-मिव धार मनिद्यं।
वंदे तारण-तरण जहाजं, राजित तनु-मर्हत् जिन राजं।।8।।

(अनुष्टुप छन्द)

शान्तेशं मंगलं कुर्यात्, दर्श ज्ञानामृतं कुरु।
सच्चारित तपः कुर्यात्, आचारं कुरु मंगलं।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथ जिनेन्द्राय समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(बसंत तिलका)

शांति प्रदायं श्री शांतिनाथं, सर्वज्ञं देवं हित दर्शकं च।
तीर्थेश चक्रेश च कामदेवं, नमो नमः तव चरणार विन्दं।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

आरती

(तर्ज वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्...)

जगमग–जगमग आरति कीजे, शांतिनाथ भगवान की।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, पदधारी गुणवान की।। टेक।।
वन्दे जिनवरम्...

नगर हस्तिनापुर में जन्में, मात पिता हर्षाए थे–2
विश्वसेन माँ ऐरादेवी, के जो लाल कहाए थे–2
द्वार–द्वार पर बजी बधाई, जय हो कृपा निधान की।
जगमग–जगमग...।। 1।।

जान के जग की नश्वरता को, जिनवर दीक्षा पाई थी–2
त्याग तपस्या देख आपकी, यह जगती हर्षाई थी–2
देवों ने भी महिमा गाई, नाथ आपके ध्यान की।
जगमग–जगमग...।। 2।।

हर संकट में जग के प्राणी, प्रभू आपको ध्याते हैं–2
भाव सहित गुण गाते नत हो, पूजा पाठ रचाते हैं–2
महिमा गाई है संतों ने, वीतराग विज्ञान की।
जगमग–जगमग...।। 3।।

शांतिनाथ जी भवि जीवों को, अतिशय शांती प्रदान करें।
शांती पाते हैं वे प्राणी, जो प्रभु का गुणगान करें।।
हर दुखियों का संकट हरती, महिमा अतिशयवान की।
जगमग-जगमग...।। 4।।

शांती प्रदायक शांती प्रभु की, आरति करने आए हैं-2
चरण शरण के भक्त मनोहर, द्वीप जलाकर लाए हैं-2
'विशद' करें हम जय-जयकारे अतिशय क्षेत्र महान की।
जगमग-जगमग आरति कीजे, शांतिनाथ भगवान की।। 5।।
वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनधरम्।। टेक।।

आशीर्वाद श्लोक

सौभाग्यं धन धान्य सौख्य विपुलं सर्वत्र कीर्त्यास्पदं।
आरोग्यं सुत मित्र बन्धु वनिता सौख्य सदा मंगलं।।
विद्या धीश्वरतां नरेश वशितां भूम्रत्पदं भूतलं।
श्री मज्जैन विधानतो भवतु ते सर्वार्थ सिद्धि त्वरै।।

आचार्य श्री का अर्घ

गुरुवर की हम महिमा गाते हैं, अपने हम सौभाग्य जगाते हैं।
चरणों में आते हैं अर्घ चढ़ाते हैं, करते हैं गुरु पद नमन।।
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है,
गुरुवर का शुभ आशिष पाया है।।

ॐ ह्रूँ प.पू. सर्व आचार्य परमेष्ठी यतीवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सर्व साधु परमेष्ठी का अर्घ

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते हैं, जो उपसर्ग परीषह सहते हैं।
समता जो धारे हैं, मुनिवर हमारे हैं, करते हम गुरु पद नमन।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है,
मुनिवर का शुभ आशिष पाया है।।

ॐ ह्रः श्री साधु परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समुच्चय महाअर्घ

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन।।
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष।।

दोहा – अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ।
चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ।।

ॐ ह्रीं श्रीं अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंच मेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो नमः / ॐ ह्रीं श्रीं मन्तं भगवन्तं कृपाल संतं श्रीवृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेव आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्य खंडे..... देशे.....प्रान्ते.....नाम्नि नगरे.....मासानामुक्तमे.....मासे.....शुभ पक्षे..... तिथौ.....वासरे.....मुनि आर्यिका श्रावक श्राविकानां सकल कर्म क्षयार्थं अनर्घ्य पद प्राप्तये समुच्चय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोलें)

शांतिपाठ

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे।।
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ।।
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी।।
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।

राजा प्रजा भक्त नर–नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी।।
जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि।।

(शान्तये शान्तिधारा–3) (दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत) (कायोत्सर्ग करोम्यहं)

विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान।
बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान।।
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।
सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन।।
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।
करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हंदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमावतं भवतु।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

(ठोने में पुष्पक्षेपण करें)

‘आशिका लेने का मंत्र’

पूजा कर आराध्य की, धरे आशिका शीश।
विशद कामना पूर्ण हो, पाँए जिन आशीष।।

जो मुस्करा कर जिया करते हैं, हँसकर गम पिया करते हैं।
वे इंसान के रूप में देवता हैं ‘विशद’ जो औरों को सहारा दिया करते हैं।।

॥ श्री शांतिनाथ स्तोत्र ॥

¼rt & ujUn 'krUn lq ir t-----½

ujUn Q.kUnkfn /;k;s 'krUn] efgek x.kUnkfn xk, egUnA
Jh 'kkfr ftu dk tk 'kkfr ls /;k,] ik.kh fo'kn lk[; 'kkrh o ik,AA
Nfo ohrjkxh g loL; R;kxh] eukgkjh enk ije ohrjkxhA
iHkq dk n[kh n%[k e tk Hkh /;k,] vfr 'kh?k eDrh n[kk ls o ik,AA1AA
ge HkVd txr e iHkq c lgkjk] g vKku dk re u ls fdukjkA
ugh tku ik, iHkq rjh ek;k] vr% tx e HkVd ugh ikj ik;kAA
Ql jkx e }"k u Hkh lrk;k] lrr ekg u tky e tk Qlk;kA
ty Øk/k vXuh e lerk u ik;] f'kyk eku dh ge ugh rkM ik,AA2AA
fd, HkfDr iHkq dh lHkh jkx tk,] ugh Hkr irkfn ck/kk lrk,A
f=ykdh ifr lc n[kk l cpkr] lHkh ldVk dk iHkq th gVkrAA
iHkk! HkfDr dj 'kfDr fut dh txk,] c< i.; lkjh Vy vkink,A
fo'kn e= g uke iHkq th rEgkjk] cu ftUnxh e gekj lgkjkAA3AA
lHkh exyk e gk exy ftu'k] lHkh mÙkek e gk mÙke fo'k"kA
g v'kj.k 'kj.k ftu iHkq th gekj] iHkq ykd e gk re pnk flrkjAA
rEgh rkr ekrk firk gk gekj] rEgh fe= Hkkrk gk thou lgkjA
tk Jk)k d Qyk l ftuoj dk /;k,] egk lEink d o Lokeh dgk,AA4AA

nkgk

^fo'kn* 'kkfr d dk"k ftu] ij 'kkfr nkrkjA
pj.k iM ge vkid] cky t; t;dkjAA

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। गुरु....1।।

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। गुरु....2।।

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।गुरु...3।।

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। गुरु....4।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर